वो लड़का
जिसने
बिल्लियों के
चित्र बनाए
RABBIT EARS
डेविड जॉनसन

“मत भूलना, उसकी माँ ने उससे कहा, "रात को बड़े स्थानों से दूर रहना; छोटी जगह पर ही सोना."

उसका मार्गदर्शन करने के लिए केवल उसकी माँ के बस यही शब्द थे. एक छोटे से जापानी लड़के को एक रहस्यमयी राक्षस द्वारा तबाह ग्रामीण इलाके में भेजा गया. एक पुजारी से लेकर एक सनकी लोहार ने बिना किसी सफलता के अपने-अपने तरीके से राक्षस का मुकाबला करने की कोशिश की. पर उस छोटे लड़के की दिलचस्पी केवल बिल्लियों के चित्र बनाने में थी. सभी लोगों द्वारा बेकार करार दिया जाने के बाद, वही लड़का अंत में राक्षस पर काबू करने में सफल हुआ और उसने अपनी भूमि को बहाल किया.

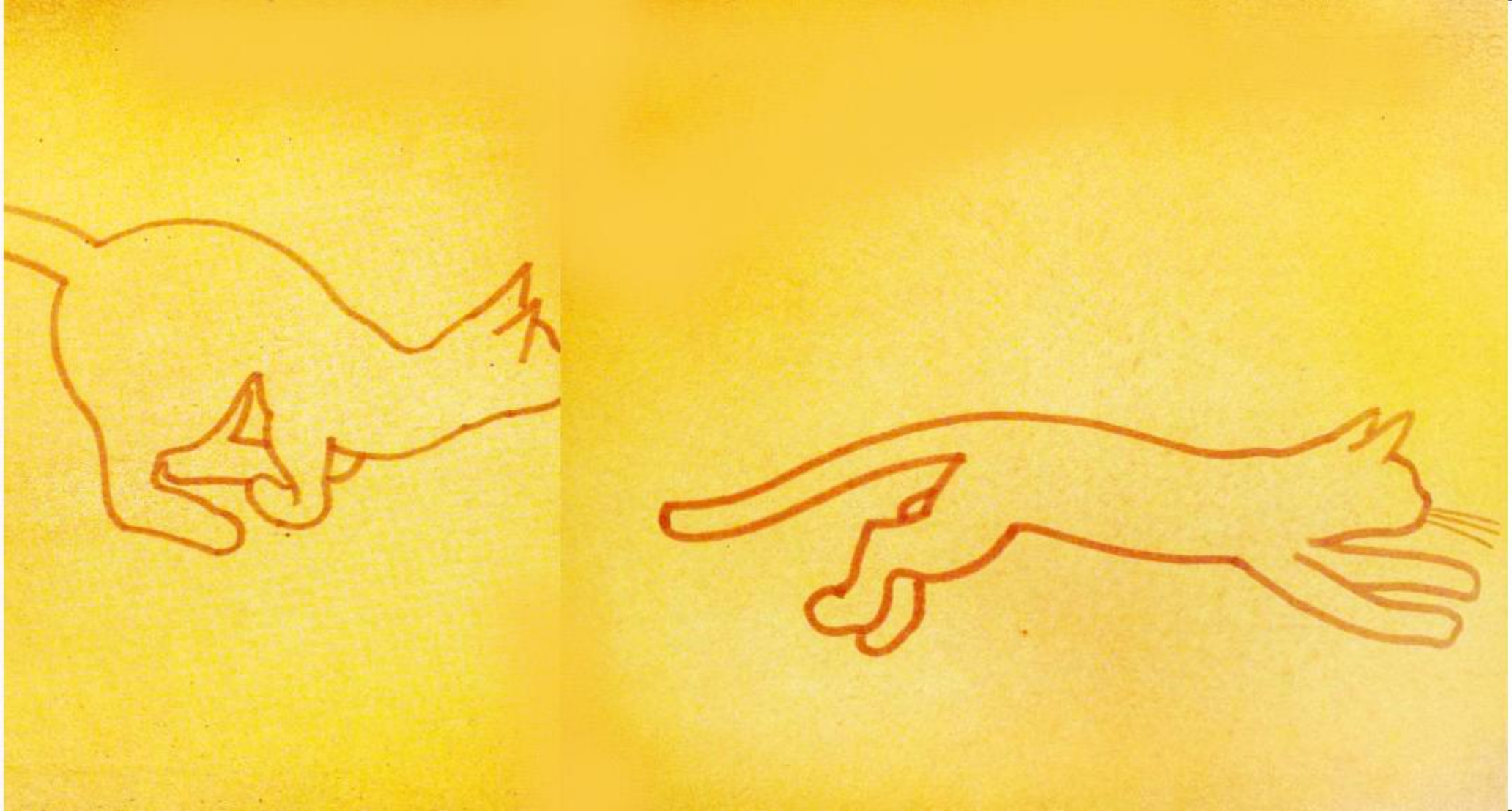

वो लड़का जिसने बिल्लियों के चित्र बनाए

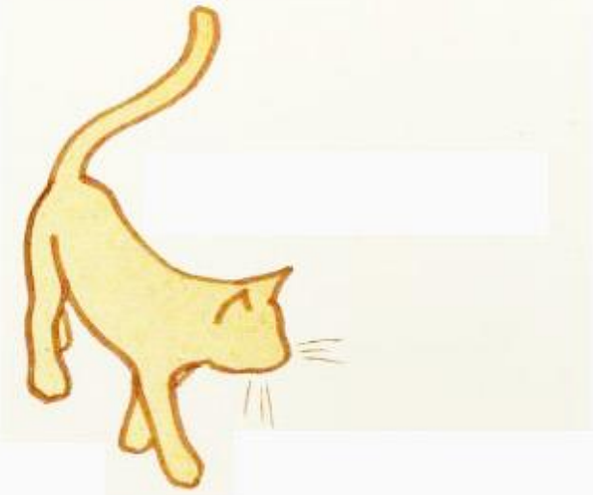

डेविड जॉनसन

मुझे डर है कि मैं आपको उस गाँव का नाम नहीं बता सकता जिसमें यह सब हुआ था. वास्तव में, मैं आपको यह भी नहीं बता सकता कि जापान के छियासठ प्रान्तों में से वो किस में हुआ, या वो किस सम्राट के शासन में किस वर्ष में हुआ था. क्योंकि यह सब बहुत पहले हुआ था इसलिए अब कोई भी ऐसी आत्मा जीवित नहीं है जिसे संभवतः वो याद हो.

बहरहाल, एक समय की बात है, जापान में एक किसान और उसका परिवार रहता था. उनका एक बड़ा परिवार था, जिसमें खाने के लिए कई मुंह थे. परिवार में हर कोई मदद करने को तैयार था, और इसलिए वे एक खुशहाल जीवन जीते थे.

लेकिन एक साल गाँव में भयानक अकाल आया. चावल के सारे खेत सूख गए; बाग खरपत से भर गए; सावधानी से लगाए गए फलों के पेड़ बंजर हो गए. यह एक भयानक राक्षस का काम था जिसने उस ग्रामीण इलाके को प्रभावित किया था. वहां पर कहर बरपाना और जीवन को नष्ट करना राक्षस की खुशी बन गई थी.

फिर भी, किसान हर सुबह बाहर जाता और जो थोड़ा चावल बचा था उसे काटता था, या जड़ों के लिए खुदाई करता था. और हालाँकि यह बहुत कठिन काम था. बच्चे अपने माता-पिता को काम में हर तरह से मदद करते थे. इन तमाम प्रयासों के बावजूद भी उन्हें भूख मिटाने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं मिलता था.

उनमें से सबसे छोटा, थोड़ा कमजोर लड़का, जो ऐसे किसी भी काम के लिए उपयुक्त नहीं लगता था. वो काफी कमजोर और छोटा था, और गांववालों के लगता था कि वो कभी भी बहुत बड़ा नहीं होगा.

और यद्यपि वो बहुत होशियार और चतुर था, प्रत्येक दिन के अंत में जब उसके भाई-बहन कुछ कीमती भोजन घर लाते, तो उसके हाथ खाली होते और उसके चेहरे पर एक शर्मिंदगी भरी मुस्कान होती थी. उसके माता-पिता जानते थे कि वो परिवार की मदद नहीं कर सकता था. वो चिंतित थे और उन्हें लगता था कि वो अतिरिक्त बोझ दूसरों के लिए अनुचित था, जो इतनी मेहनत कर रहे थे.

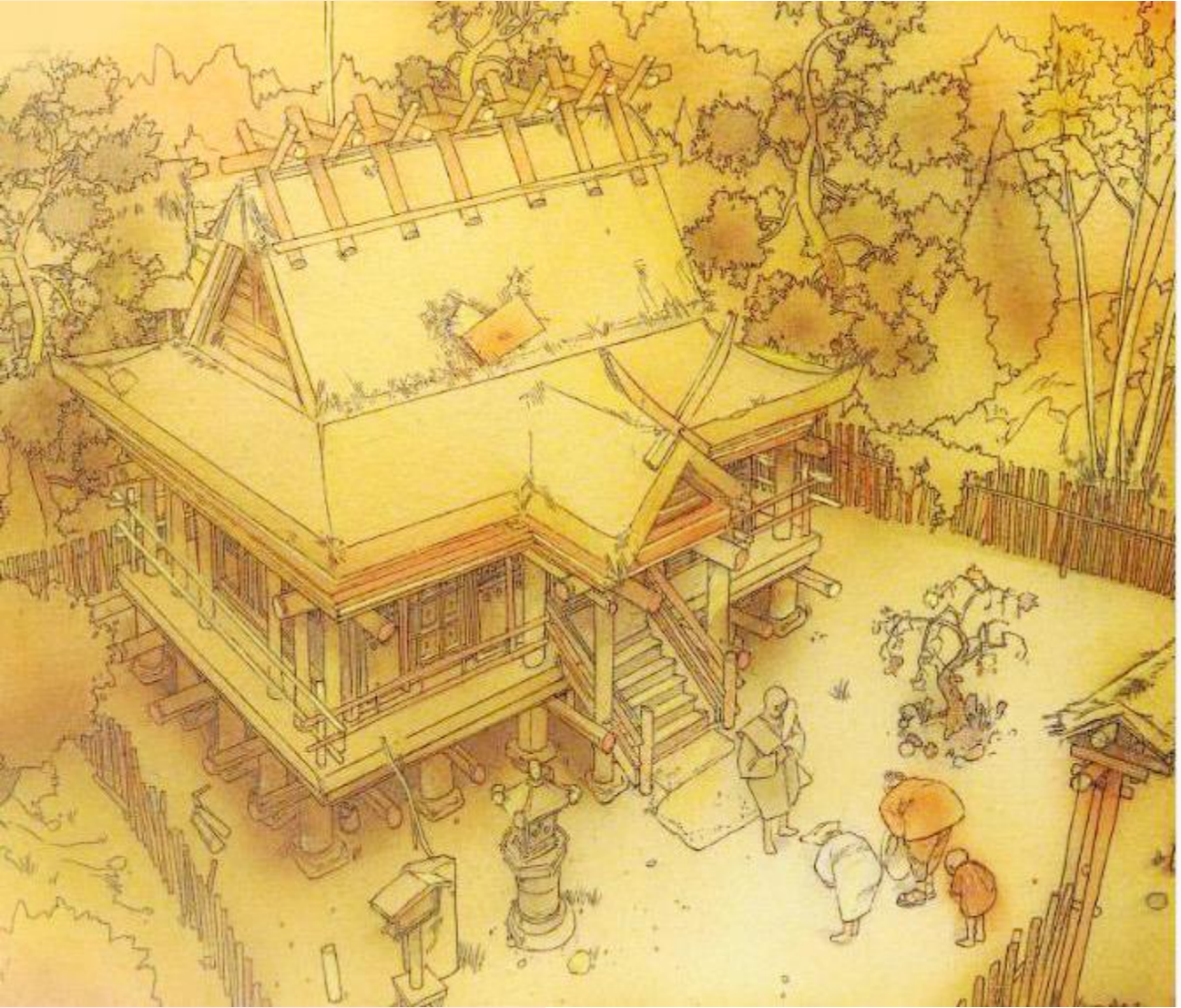

अंत में, माता-पिता ने उसे गांव के मंदिर में ले जाने का फैसला किया. वहाँ, उन्होंने विनम्रतापूर्वक आदरणीय पुजारी से पूछा कि क्या वो उनके पुत्र को अपने नौकर और शागिर्द जैसे रखेंगे. बूढ़े पुजारी ने लड़के से प्यार से बात की और उससे कुछ कठिन सवाल पूछे. बच्चे के जवाब इतने चतुर थे कि पुजारी उसे वहां रखने के लिए तैयार हो गया और उसने लड़के को वो सब सिखाने का वादा किया जो एक पुजारी को जानना चाहिए.

उसके बाद माता-पिता ने पुजारी को प्रणाम किया और अपने घर वापस जाने के लिए निकल पड़े. लेकिन उसकी माँ पीछे मुड़ी क्योंकि वो उसकी माँ थी और उसे गले लगाए बिना और उसके बालों को सहलाये बिना वो वापिस नहीं जा सकती थी.

फिर, अपने बेटे को गले लगाया. "एक बात याद रखना," माँ ने लड़के से कहा, "रात को बड़े स्थानों से दूर रहना; छोटी जगह पर ही सोना."

इसके साथ वो मुड़ी, और तेज कदमों से उसने सड़क पर अपने पति को पकड़ लिया, जो मंदिर से दूर अपने खेत की ओर जा रहा था.

लड़के को उसकी माँ के शब्दों का मतलब समझ में नहीं आया. उसने सोचा और बहुत सोचा. जब उसने अपनी छोटी सी गठरी खोली, तब भी वो उसका अर्थ नहीं समझ पाया.

लड़के ने जल्द ही वो सब सीख लिया जो बूढ़े पुजारी ने धैर्यपूर्वक उसे सिखाया. वैसे लड़का ज्यादातर चीजों में बहुत आज्ञाकारी था. लेकिन उसकी एक अजीब आदत थी. वो बिल्लियों के चित्र बनाता था, हर जगह - वहां भी जहाँ बिल्लियाँ नहीं बनाई जानी चाहिए थीं. उसने उन्हें धार्मिक पुस्तकों के हाशिये पर भी बनाया, और उन्हें मंदिर के पर्दों पर और खंभों पर भी खींचा.

पुजारी ने एक से अधिक बार उससे कहा कि वो सही नहीं था, कि बिल्लियों को मंदिर में नहीं होना चाहिए था - और एक से अधिक बार लड़के ने ईमानदारी से अपनी गलती के लिए माफी भी मांगी. लेकिन जल्द ही, वो बिल्लियों के और चित्र बनाने लगा.

हालाँकि जब से राक्षस आया था, तब जीवन बहुत कठिन हो गया था. राक्षस ने उस क्षेत्र में हर किसी किसान और उसके परिवार को पीड़ित किया था, और उनमें से सबसे बहादुर, और सबसे मजबूत लोग भी, गाँववालों को उस राक्षस से छुड़ाने में सक्षम नहीं हुए थे.

अंत में पुजारी ने पूरे गांव में एक घोषणा की. उसने घोषणा की कि उन्हें छुटकारा दिलाने के लिए, वो स्वयं दानव से मुकाबला करेगा. वो रहस्यमय धार्मिक सूत्र की एक हजार बार नकल करेगा - वो एक परम आध्यात्मिक जादू होगा.

उसने ध्यान से अपने पत्थर पर कुछ स्याही घिसी और अपना ब्रश डुबोया और सबसे पवित्र पाठ की नकल करना शुरू किया - एक बार, दस बार, पच्चीस बार. वो घंटों अपने काम पर झुका रहा. जब वो उसे लगभग दो सौ बार लिख चुका, तो उसने अपना ब्रश नीचे रखा और थक कर वापस बैठ गया. अपनी आँखें मलते हुए, उसने देखा कि लड़का, उसका नया शिष्य, उसे देख रहा था.

"अच्छा इधर आओ," पुजारी ने पांडुलिपि की ओर इशारा करते हुए कहा, "तुम ग्यारह साल के हो, है ना? तुम्हारी आत्मा लगभग मेरी तरह ही ईमानदार है. अब तुम थोड़ी देर के लिए नक़ल उतारो."

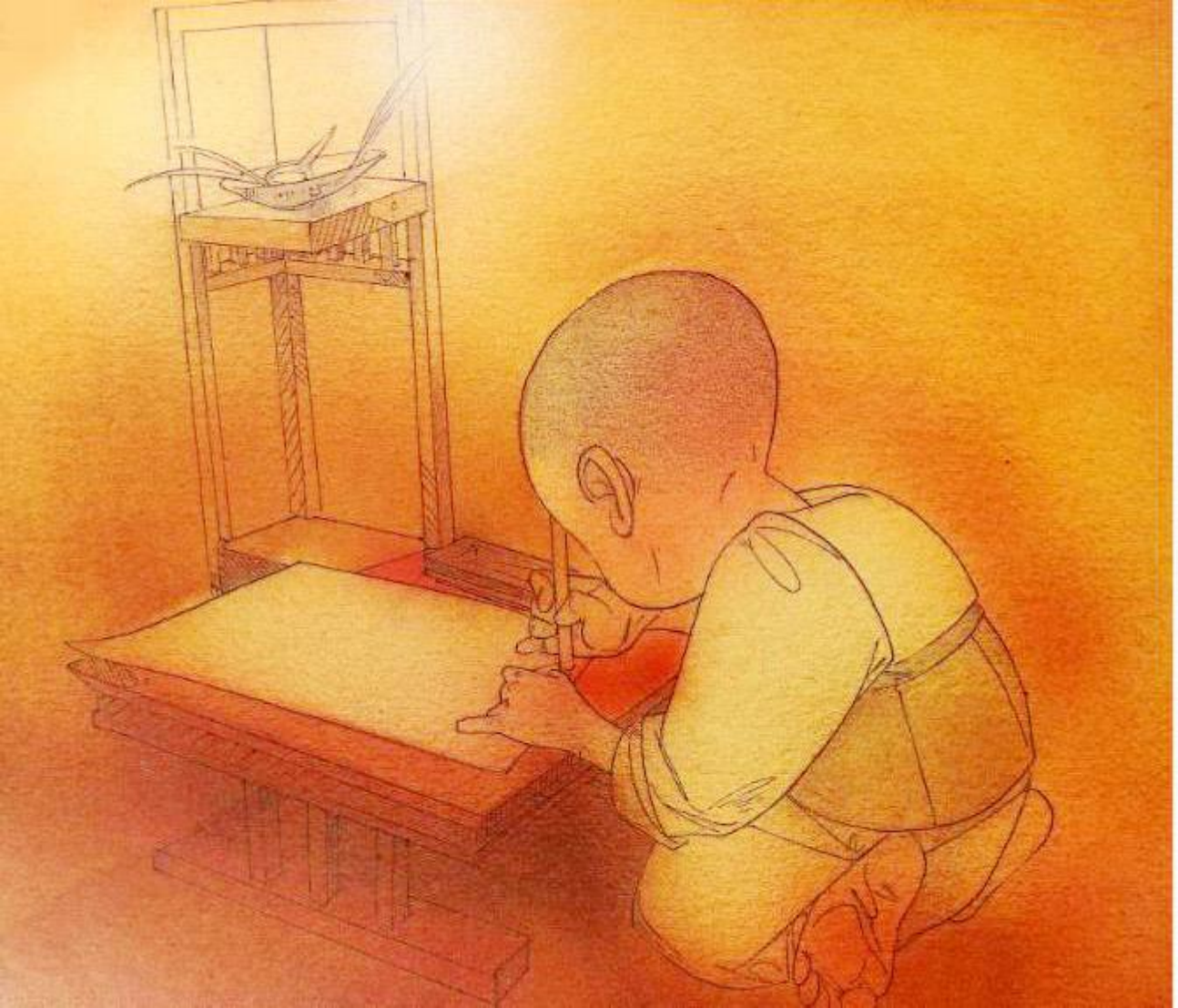

लड़के ने अच्छी तरह से नकल की - बड़े करीने से और स्थिर हाथ से. उसने सोचा कि शायद ऐसा करके वो अपने परिवार की मदद कर सकता था, और उसने खुशी-खुशी खुद को इस काम में लगा दिया. लेकिन वो एक कठिन काम था.

उस शाम पुजारी लौट आया और काम को पूरा देखकर वो मुस्कुराया.

हालांकि, पांडुलिपि की अधिक बारीकी से जांच करने पर, पुजारी की मुस्कान गुस्से में बदल गई.

पुजारी ने लड़के को देखने के लिए कागज खोला. यहाँ और वहाँ, उस पर बिल्लियां बनी थीं. हाशिये में, पात्रों के बीच. पर कमल सूत्रों में बिल्लियाँ नहीं थीं. पुजारी ने गुस्से से अपनी आँखें हल्के से बंद कीं और फिर पांडुलिपि को फाड़ दिया.

"यह नहीं चलेगा," पुजारी ने कहा. "तुम अब यहां नहीं रह सकते. तुम्हें सुबह को यहाँ से जाना होगा."

इतना कहकर पुजारी सिर हिलाते हुए वहां से चला गया.

छोटा लड़का अकेला रह गया, बेइज्जत और लज्जित. उसने अपनी स्याही और ब्रश और कुछ चीजें एकत्र कीं और सोचा कि कहीं सुबह को वो चीजें पुजारी को परेशान न करें.

तभी, शर्म की इस घड़ी में उसे अपनी माँ के शब्द याद आए: "रात को बड़े स्थानों से दूर रहना; छोटी जगह पर ही सोना."

इसलिए, उसने मंदिर के सभी कोनों में, सीढ़ियों के नीचे, और पर्दों के पीछे देखा, फिर उसे अंत में एक नक्काशीदार हैंडल वाला एक छोटा सा संदूक मिला. लड़का उसके अंदर लेट गया और नहीं जैसे ही उसने ऊपर के ढक्कन को बंद किया, वो गहरी नींद में सो गया.

जब वो जागा, तो उसे लगा कि काश वो हमेशा के लिए ही उस संदूक में सोता रहता. फिर भी, उसे पता था कि उसे वहां से जाना ही होगा. उसने अपने संदूक का ढक्कन खोला और फिर बाहर निकला. उसने अपनी छोटी सी गठरी उठाई और भोर का सामना करने के लिए मुड़ा.

लेकिन जैसे ही उसने अपने चारों ओर देखा, वो हांफने और कांपने लगा. मंदिर लगभग नष्ट हो चुका था! उसके परदे फटे हुए थे, फर्श टूट गया था, मूर्तियाँ चकनाचूर हो चुकी थीं.

और वहाँ, फर्श के बीच में, आदरणीय पुजारी बैठे थे. उसके वस्त्र कटे-फटे थे और उनका शरीर चोट के निशानों से क्षत-विक्षत था. वो मुश्किल से हिल पा रहे थे. पुजारी ने दर्द से अपना सिर उठाया और जलती आँखों से लड़के की ओर देखा.

"राक्षस," वो फटे और सूजे हुए होंठों से फुसफुसाए. "तुम्हें यहाँ से तुरंत जाना चाहिए. तुम्हारी मूर्खता ही मन्दिर में यह तबाही लाई है."

फिर, अपनी आँखें बंद करते हुए, पुजारी ने अपने दुर्भाग्य पर अपना सिर नीचे झुका दिया.

लड़के ने मंदिर छोड़ दिया. मंदिर के विनाश के लिए अपराधबोध के बोझ तले दबे, वो गाँव से दूर सड़क पर चला गया.

वो पूरी सुबह चला, जब तक कि आकाश में सूर्य ऊपर नहीं उठा. फिर वो एक छोटे से गांव में पहुंचा. उसने केवल कुछ साधारण घर देखे, लेकिन आखिरी घर को छोड़कर बाकी सभी बंद और खाली दिख रहे थे. लड़का आखिरी घर की दहलीज के पास पहुंचा और उसने अंदर झाँका.

एक लोहार, अपनी भट्टी और फाउंड्री में काम कर रहा था. अचानक वो आदमी सीधा बैठ गया और पलटा.

"राक्षस ने सभी लोगों को खदेड़ दिया है. हरेक इंसान को. अब मैं यहाँ अकेला बच गया हूँ. लेकिन मैं नहीं डरूँगा. जैसा कि तुम देख सकते हो."

उसने अपने हाथ एक लोहे की पट्टी पकड़ रखी थी.

"मैं एक घातक तलवार बना रहा हूं उस राक्षस को मारने के लिए!"

फिर उसने तलवार को हवा में ज़ोर से घुमाया.

"तुम यहाँ मेरी मदद करने के लिए आए हो: बेशक! हालाँकि तुम बहुत ताकतवर नहीं लगते हो."

फिर उसने लड़के की पतली बाँह को नोचकर देखा.

"फिर भी, तुम धौंकनी चलाने के लिए फिट होगे."

अपनी मूल जिज्ञासा और सेवा करने की उत्सुकता के कारण, लड़का जल्द ही धौंकनी चलाने में निपुण हो गया. अपने नए शागिर्द से लोहार बहुत खुश था.

लोहे को बुझाने और ब्लेड को तड़का लगाने के लिए मुझे पानी लाना होगा. कुआं यहाँ कुछ दूरी पर है. मैं कोशिश करूंगा कि ज्यादा देर न लगे, लेकिन तब तक तुम आग को चालू रखना. बस थोड़ी मेहनत करना और मैं शीघ्र ही लौटूंगा."

धौंकनी नियमित रूप से चलती रही और अंगारों से फायरिंग करती रही. और जैसे ही लड़के ने चमकते अंगारे को देखा, उसके सामने हर तरह की अजीब आकृतियाँ आने लगीं - पक्षी, घर, चेहरे और बिल्लियाँ. हाँ, बिल्लियाँ!

लड़के के आसपास भट्टी के कोयले के टुकड़े जमीन पर बिखरे पड़े थे. उसने एक कोयले को उठाया और उससे दीवार पर चित्र बनाने की कोशिश की. सच में, कोयले ने एक स्पष्ट, काली रेखा बनाई - जो एक लंबी पूंछ बन गई - जो बाद में एक बड़ी, झुकी हुई बिल्ली बन गई ...

जब तक लोहार लौटा, तब तक वहां दर्जनों बिल्लियाँ थीं. लड़के ने जैसे ही दरवाजे पर लोहार की खाँसी सुनी तभी अचानक उसे असलियत याद आई. पर धौंकनी बंद पड़ी थी जिससे आग ठंडी हो गई थी; और लोहे की तलवार ठंडी और काली हो गई थी.

बाल्टी को नीचे रखते हुए, लोहार ने इधर-उधर देखा और हंस पड़ा.

"देखो तुम कभी लोहार नहीं बन पाओगे, मेरे लड़के, इतना पक्का है."

लड़के ने पछतावे में अपना सिर झुका लिया. “देखो, तुम्हारी बिल्लियाँ बहुत सुन्दर हैं, लेकिन यहाँ पर उनका कोई काम नहीं है."

लोहार ने एक कूची का ब्रश उठाया. "देखो मैं यह पानी ले आया हूँ..."

उसने ब्रश लड़के को सौंप दिया.

"अच्छा होगा यदि तुम उन चित्रों को मिटा दोगे.“

जब बिल्लियों के चित्र मिट गए, तो लोहार ने अपने चावल लड़के के साथ साझा किए. उसने लड़के से कहा कि अगर वो चाहे तो वो वहाँ दुकान में रात बिता सकता था. लोहार फिर पीछे के अपने कमरे में जाकर सो गया.

लड़के ने खुद को फिर से अकेला पाया, और पहले की तरह, उसे अपनी माँ के शब्द याद आए: "रात को बड़े स्थानों से दूर रहना; छोटी जगह पर ही सोना." फिर उसे एक बड़ी केतली दिखी. लड़का उसमें घुस गया और उसने ढक्कन बंद कर लिया. दिन की यात्रा से थककर वो जल्दी से सो गया.

देर रात को वो एक झटके के साथ उठा. उसकी आंखें चुभ रही थीं और उसके लिए सांस लेना मुश्किल हो रहा था. अपने छिपने के स्थान से बाहर झाँककर उसने देखा कि लोहार की दुकान में आग लगी हुई थी! वो जल्दी से अपने बर्तन में से बाहर निकला और गली में भाग गया. वहाँ उसने लोहार को देखा: उसके कपड़े जले हुए और फटे हुए थे और उनसे धुंआ निकल रहा था; उसका चेहरा काला हो गया था; उसके बाल जल गए थे.

कुछ समय बाद लोहार ने हकलाते हुए कहा, "दानव-शैतान-जानवर!" फिर वो मुड़ा और सुबह की धुंध में गायब हो गया.

एक बार फिर, लड़के ने निराश महसूस की. उसे लगा कि अगर उसने और अधिक मेहनती की होती तो ऐसा नहीं होता. लेकिन अब वो उसके बारे में कुछ नहीं कर सकता था.

वो फिर घर जाने वाली सड़क पर निकल पड़ा.

शाम हो चुकी थी. उसने पूरे दिन न तो किसी आत्मा को देखा था और न ही किसी इंसान को.

तभी अचानक उसके सामने एक गांव आ गया. शायद वो चलते-चलते ही सो गया था. वहां भी किसी इंसान का कोई संकेत नहीं था; घर और दुकानें बंद थीं और अंधेरा था.

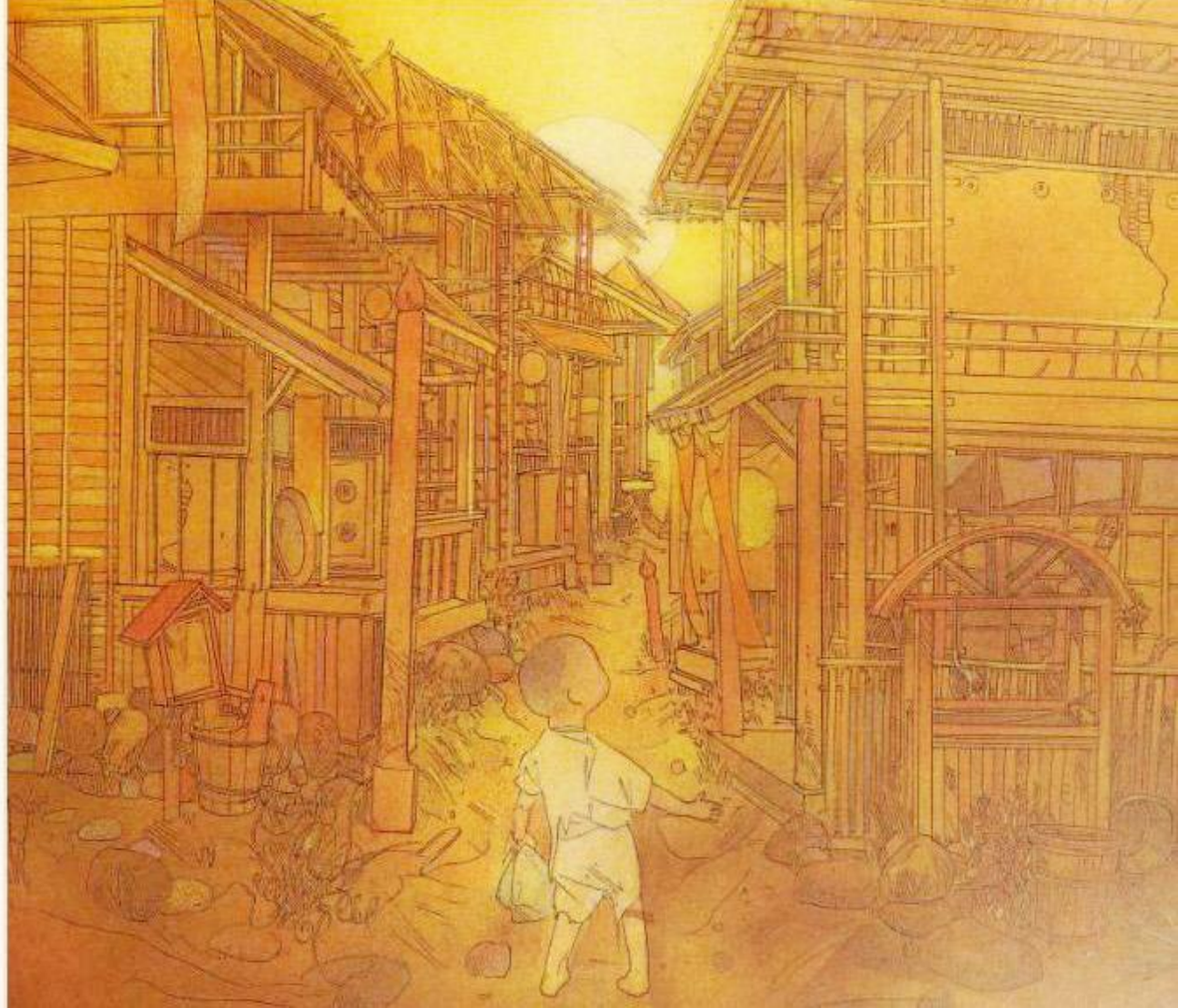

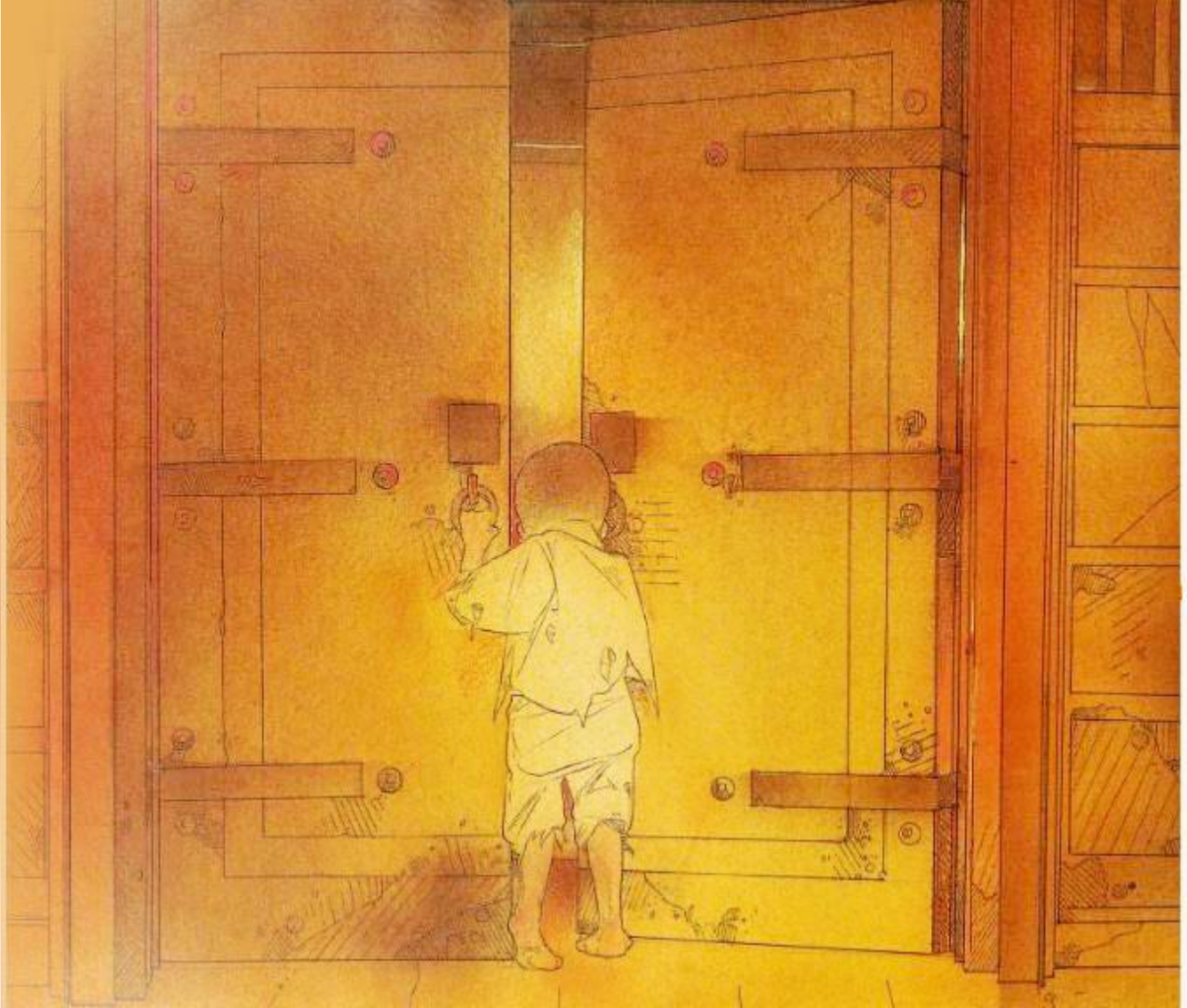

लेकिन फिर, गली के दूर छोर पर उसे एक बड़ी इमारत दिखाई दी, शायद वो एक मंदिर था. और भीतर उसे मंद टिमटिमाता हुआ एक प्रकाश दिखा.

लड़का तुरन्त इमारत के पास गया और उसने दस्तक दी; दुबारा फिर से दस्तक दी; फिर एक बार और, लेकिन फिर भी कोई नहीं आया. अंत में, उसने धीरे से दरवाजे को धक्का दिया और वो यह देखकर प्रसन्न हुआ कि दरवाज़ा अंदर से बंद नहीं था. वो अंदर गया और उसने देखा कि एक दीया जल रहा था. लेकिन वहां कोई इंसान नहीं था.

जब उसने चारों ओर देखा, तो उसने देखा कि सब कुछ धूल से भरा था और सब जगह मकड़ी के जाले लटके थे. उसने अपनी उँगलियों से धूल को पोंछा. फिर, अपनी उँगलियों के पीछे छूटी लकीरों में, उसे बिल्ली की मूंछें दिखाई दीं. लड़के ने उस चित्र को देखा और वो मुस्कुराया. फिर उसने अपने चित्र बॉक्स को अपनी गठरी से बाहर निकाला.

रात में बहुत देर हो चुकी थी और लड़का बहुत, बहुत थका हुआ था. लेकिन सभी दीवारों पर बिल्लियाँ थीं, स्क्रीन पर बिल्लियाँ, खंभों पर बिल्लियाँ, जो झुकी हुई थीं कुछ सो रही थीं और उछल-कूद कर रही थीं - और वो बिल्लियाँ जो बस बैठकर देख रही थीं. वहां हर तरह की बिल्लियाँ थीं और बिल्लियाँ वो सब कुछ कर रही हैं जो उस लड़के की बिल्लियां करती थीं.

जब वो सोने लगा, तब अचानक उसे अपनी माँ के शब्द याद आए, जैसे कि माँ उसके कान में फुसफुसा रही हों: "रात को बड़े स्थानों से दूर रहना; छोटी जगह पर ही सोना."

और यद्यपि वह उन्हें पूरी तरह से समझ नहीं पाया था, लेकिन अब जब वो इन शब्दों के बारे में सोच रहा था, तो उसे पहली बार थोड़ा डर लगा. वो इमारत बहुत बड़ी थी और लड़का बिलकुल अकेला था. एक कोने में, धूल से छिपी, एक छोटी सी अलमारी खड़ी थी, जिसमें एक स्लाइडिंग दरवाजा था. लड़का उसमें घुस गया, उसने दरवाजा बंद किया, अपनी आँखें बंद कीं और तुरंत सो गया.

बहुत देर रात को वो एक भयानक शोर से वो जाग गया! लड़ना, चीखना, रोना और गरजना. इधर, फिर उधर, फिर उधर. अभी वो उसके चारों ओर था, बहुत पास - फिर वो अचानक बहुत दूर चला गया.

खरोंचने और चीखने की आवाज़ें. भयानक और फिर अधिक भयानक और फिर और भी भयानक, जिससे कि पूरी इमारत हिल उठी. लड़के को उम्मीद थी कि जल्द ही उसका अंत आएगा या वो बहुत डर से मर जाएगा. लेकिन वो वहीं अलमारी में ही लेटा रहा, बिल्कुल शांत. और फिर कुछ समय बाद वहां फिर से सन्नाटा छा गया. लेकिन वो अभी भी अपने गुप्त आश्रय को छोड़ने से डर रहा था.

वो तब तक नहीं हिला जब तक कि अलमारी में दरारों में से उसने सुबह का सूरज चमकते हुए नहीं देखा. अब वो सुबह के पक्षियों की आवाज़ सुन सकता था.

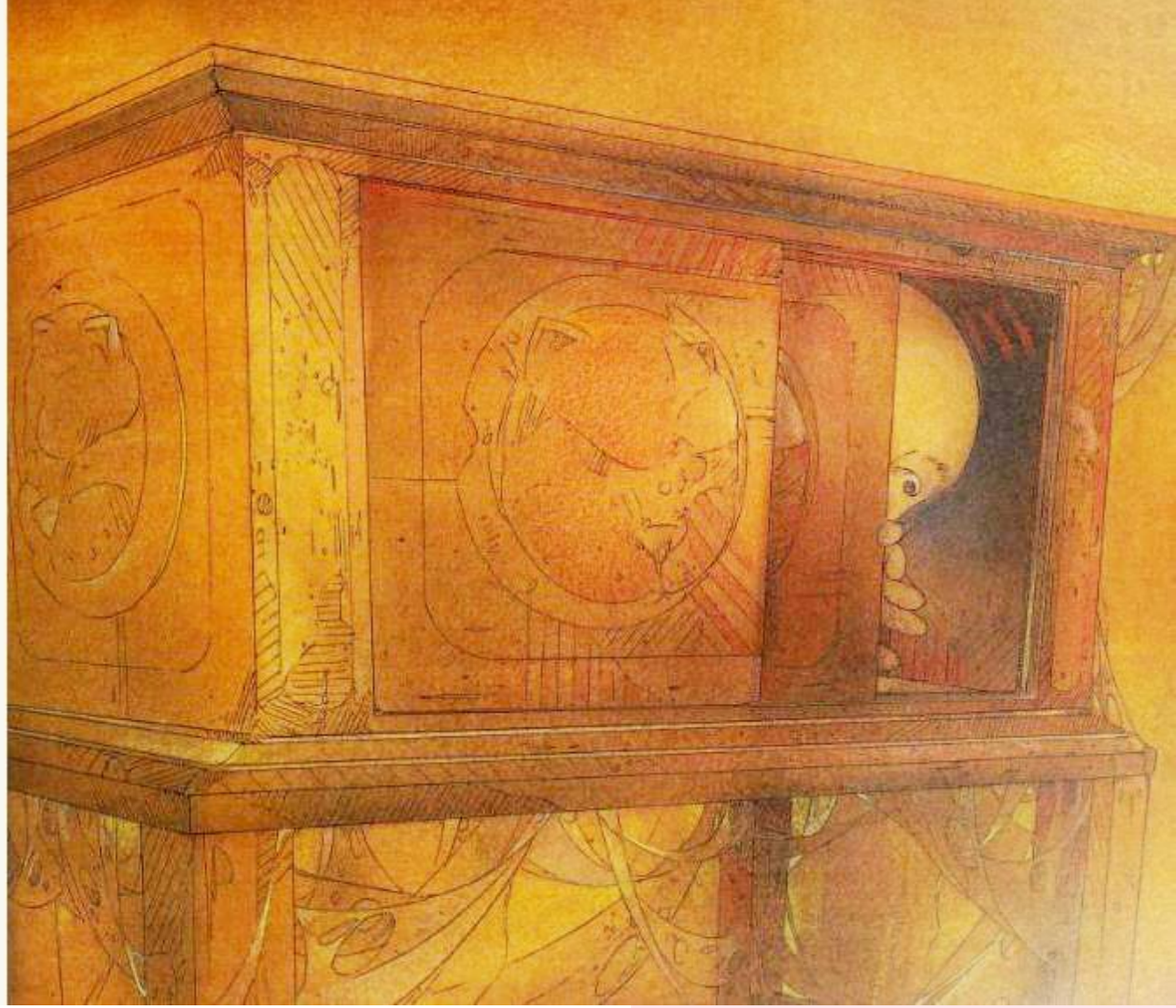

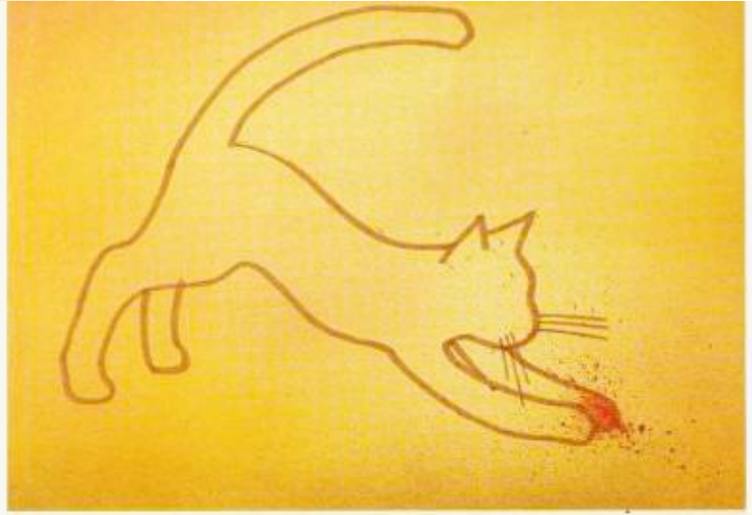

फिर उसने बहुत सावधानी से अपने छिपने के स्थान का दरवाजा खोला, और चारों ओर देखा.

पहली चीज़ जो उसने देखी - फर्श खून से लाल-सुर्ख था. और फिर, बीच में कोई बड़ा जीव मरा पड़ा था. उसने एक विशाल, राक्षसी चूहे को मरे पड़े देखा. वो चूहा एक गाय से भी बड़ा था!

लेकिन भला कौन उसे मार सकता था? उसे कोई मनुष्य या अन्य प्राणी वहां दिखाई नहीं दिया.

फिर लड़के ने उन सभी बिल्लियों के मुंह और पंजे देखे जो उसने एक रात पहले बनाए थे.

वे लाल थे; वे पंजे खून से भीगे हुए थे. वो बहुत देर तक अपने चारों ओर अपनी बिल्लियों को घूरता रहा. फिर, जब सूरज आसमान में ऊँचा उठा वो फिर वो मंदिर से निकलकर अपने गाँव की ओर सड़क पर चल पड़ा.

उस लड़के ने बिल्लियों के चित्र बनाना जारी रखा और कुछ समय बाद वह एक बहुत ही महान कलाकार बन गया. ऐसा कहा जाता है कि उसके द्वारा खींची गई कुछ बिल्लियाँ आज भी जापान में यात्रियों को दिखाई जाती हैं.